आरएलए समाचार

आपकी आवाज आप तक

रामलाल आनंद महाविद्यालय | सत्र 2016–17 | पृष्ठ 1–4

फास्ट न्यूज

माँ के नाम की जर्सी

गर्व के साथ आखरी वनडे में टीम इंडिया के सभी खिलाड़ियों ने पहली बार माँ के नाम की जर्सी पहनी, जो लोगों के आकर्षण का केन्द्र बनी।

सैटेलाइट होगा लांच

अगले साल विश्व रिकॉर्ड रचेगा इसरो, जनवरी 2017 को इसरो एक साथ 82 सैटेलाइट लांच करेगा। इसमें 60 सैटेलाइट अमेरिकी, 20 यूरोप की और 2 यूके की होगी।

दो फीसदी भत्ता

मोदी सरकार ने केंद्रीय कर्मचारियों के लिए 2 फीसदी महंगाई भत्ते को मंजूरी दे दी है। इससे कर्मचारियों में खुशी की लहर है।

200 लड़ाकू विमान खरीदेगा भारत

पाकिस्तान–चीन से टक्कर लेने की तैयारी में भारत एयरफोर्स के 200 लड़ाकू विमान खरीदेगा। इससे भारतीय सेना की ताकत में इजाफा होगा।

जानवरों की संख्या घटी

1970 के बाद से अब तक दुनिया भर में जंगली जानवरों की संख्या में 58 फीसदी की कमी आई है। इस बात को लेकर पर्यावरण समूह ने रिपोर्ट जारी की।

फ्लाइट में यात्री की मौत

दिल्ली से दोहा जा रही जेट एअरवेज की फ्लाइट में एक यात्री की मौत हो गई। बताया जा रहा है कि विमान के उड़ान भरने के बाद से ही यात्री की तबियत बिगड़ी।

पाक फायरिंग में जवान शहीद

पाकिस्तान ने फिर सीजफायर का उल्लंघन करते हुए जम्मू कश्मीर के पुंछ और नौशेरा में फायरिंग की। जिसमें बीएसएफ का एक जवान शहीद हो गया और एक अन्य जवान जख्मी अवस्था में है।

नियमों का उल्लंघन बनाम अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता

अमित कुमार

नई दिल्ली। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने हिंदी समाचार चैनल 'एनडीटीवी इंडिया' के प्रसारण पर नौ और दस दिसंबर को न दिखाए जाने का आदेश जारी किया है। पठानकोठ आतंकवादी हमले की कवरेज में प्रसारण नियमों का उल्लंघन करने पर यह प्रतिबंध लगाया गया है। यह पहला मौका है जब आतंकी हमलों की कवरेज करने पर इस तरह चैनल के प्रसारण पर रोक लगाई गई हो। मंत्रालय का आरोप है कि जनवरी में पठानकोठ हमले के कवरेज के दौरान चैनल ने संवेदनशील जानकारियां प्रसारित की थी, जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा हो सकता था। प्रतिक्रिया देते हुए एनडीटीवी का बयान सामने आया जिसमें चैनल ने अपनी कवरेज को संतुलित बताया है। चैनल ने आपातकाल के दिनों को याद करते हुए कार्रवाई को असाधारण बताया है। एनडीटीवी इंडिया के बाद सरकार ने एक उच्चस्तरीय समिति की सिफारिशों के तहत दो चैनलों न्यूज टाइम असम को एक दिन और 'केयर वर्ल्ड चैनल' को सात दिन बंद रखने का आध्यादेश जारी किया है। आरोप है कि असम के चैनल ने प्रोग्रामिंग दिशा निर्देशों का उल्लंघन कर एक नावालिक लड़की की पहचान का खुलासा किया था, वहीं 'केयर वर्ल्ड चैनल' ने आपत्ति. जनक कार्यक्रम का प्रसारण किया। चैनलों के प्रसारण पर बैन को लेकर जहां एक ओर जी मीडिया प्रमुख सुभाष चंद्रा ने इसे सही ठहराया, वहीं दूसरी ओर बिहार के मुख्यमंत्री नितीश कुमार ने इसे अभिव्यक्ति की आजादी का अपमान माना। इस कार्रवाई को पत्रकारिता के काले अध्याय के रूप में देखा जा रहा है।

चीनी मांझे पर प्रतिबंध

कात्यायनी तिवारी

नई दिल्ली। पतंग प्रतियोगिता पक्षियों के लिए जानलेवा साबित हो रही है। इसका एक बड़ा कारण चीनी मांझा है। हर वर्ष इस तरह के हालातों को मद्देनजर रखते हुए आखिर हमारी सरकार ने 16 अगस्त 2016 को चीनी मांझे पर पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 के सेक्शन पांच के तहत प्रतिबंध लगा दिया है। इस नियम का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ पांच वर्ष की कैद व एक लाख रूपये तक के जुर्माने का प्रावधान है।

जश्न का जरिया या बीमारी को आमंत्रण

अवकेश कुमार/मुदित भुटानी

नई दिल्ली। दिल्ली शहर लगातार प्रदूषण की समस्या से झूझता नजर आ रहा है। दीवाली के अगले दिन प्रदूषण का स्तर तीन सालों में सबसे ज्यादा दर्ज किया गया। पंजाब और हरियाणा में फसलों के अवशेषों को जलाए जाने से भी दिल्ली की हवा पर बहुत ज्यादा प्रभाव पड़ा है। मौसम वैज्ञानिकों का कहना है कि हवा की क्वालिटी इतनी खराब हो चुकी है कि जिन्हें सांस की बीमारी नहीं है यह उनके लिए भी घातक साबित हो सकती है। बढ़ते प्रदूषण के कारण दिल्ली में दीवाली के बाद से लगातार धुंध छाई हुई है। सीएसई ने मौसम विभाग के आंकड़ों के अनुसार बुधवार को प्रदूषण के लिहाज से सबसे खतरनाक दिन बताया। दिल्ली के कई प्रदूषण जाँच केंद्रों पर पीएम 2.5 और पीएम 10 जैसे प्रदूषित कणों का स्तर सामान्य से पाँच गुना ज्यादा दर्ज हुआ। भू–विज्ञान मंत्रालय के परियोजना कार्य के सफर में पीएम 2.5 का दिल्ली का एवरेज लेवल 348 माइक्रो ग्राम क्यूबिक मीटर दर्ज हुआ। जबकि इसका सामान्य स्तर 60 एमजीसीएम होता है। पीएम 10 का लेवल सामान्य से पाँच गुना ज्यादा के साथ 522 एमजीसीएम दर्ज हुआ। 'द एनर्जी रिसोर्सेज इंस्टिट्यूट' के फैलो सुमित शर्मा ने बताया कि प्रदूषण स्तर पिछले दो सालों की तुलना में पहली बार नवम्बर के पहले हफ्ते में सबसे ज्यादा खतरनाक कैटिगरी में दर्ज हुआ है। शर्मा ने कहा कि पिछले कुछ सालों की तुलना में पंजाब और हरियाणा जैसे राज्यों में फसलों के अवशेषों का जलना जल्दी शुरू हो गया, जिससे दिल्ली की हवा पर चालीस प्रतिशत से ज्यादा प्रभाव पड़ा है। यह प्रभाव ठण्ड के मौसम में शीर्ष पर पहुँच जाएगा। क्योंकि बढ़ती सर्दी से हवा में ठहराव आ जाता है। वह नम हो जाती है।

मौसम विभाग के मुताबिक दिल्ली में बढ़ती धुंध ने पिछले सत्तरह साल का रिकॉर्ड तोड़ा। बढ़ते प्रदूषण के प्रभाव के चलते दिल्ली में हेल्थ इमरजेंसी जैसे हालात उत्पन्न हो गए हैं। दिल्ली–एनसीआर के कई स्कूलों ने घने प्रदूषण के चलते छुट्टियों का एलान कर दिया है। डॉक्टरों का कहना है कि प्रदूषण के चलते खांसी, जुकाम, नजला, छाती बलगम, जैसी कई खतरनाक बीमारियां बढ़ गईं हैं। केंद्र ने प्रदूषण के प्रभाव को देखते हुए दिल्ली और आसपास के राज्यों के अफसरों की शुक्रवार को बैठक बुलाई गई। जिसमें प्रदूषण से निजात पाने के उपायों विस्तार से चर्चा की गई। साथ ही दिल्ली सरकार ने भी प्रदूषण की समस्या से निपटने के लिए कई उम्दा प्लान तैयार कि हैं। जिन पर सख्ती से अमल किया जाएगा। सरकार ने कहा है कि कंस्ट्रक्शन साइटों पर डस्ट और ओपन बर्निंग पर एक्शन लिया जाएगा। साथ ही सड़कों की वैक्यूम क्लीनिंग और पानी से धुलाई की जाएगी और एयर प्यूरीफायर भी लगेंगे। अगर कोई प्रदूषण फैलाता है तो उसकी शिकायत स्वच्छ दिल्ली एप पर की जा सकेगी जिससे उस पर कड़ाई से कार्यवाही की जा सकेगी।

प्रदूषण की मार : धुंध में ढक गई देश की राजधानी दिल्ली।

पंजाब और हरियाणा में फसलों के अवशेषों को जलाए जाने से फैला प्रदूषण

फसलों के अवशेषों के जल्दी जलने से दिल्ली की हवा पर 40 फीसद ज्यादा प्रभाव पड़ा

सीएसई के अनुसार बुधवार रहा प्रदूषण के लिहाज से सबसे खतरनाक दिन

मौसम विभाग के मुताबिक दिल्ली में बढ़ती धुंध ने पिछले सत्तरह साल का रिकॉर्ड तोड़ा

दिल्ली–एनसीआर के कई स्कूलों में घने प्रदूषण के चलते छुट्टियों का एलान

सरकार के स्वच्छ दिल्ली एप पर प्रदूषण फैलाने वालों की, की जा सकेगी शिकायत

सीबीएसई दसवीं बोर्ड परीक्षा हुई अनिवार्य

आयुषी गौर।

नई दिल्ली। सीबीएसई दसवीं बोर्ड की परीक्षा अब अनिवार्य हो जाएगी। इसका प्रस्ताव 25 अक्टूबर को केंद्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड (केब) की बैठक में रखा गया। मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने बैठक में कई नए प्रस्ताव रखे जिनमें से एक सीबीएसई दसवीं बोर्ड को अनिवार्य बनाने का था। वर्ष 2011 में मानव संसाधन विकास मंत्री ने दसवीं बोर्ड को वैकल्पिक बना दिया था। जिसके बाद विद्यार्थी बोर्ड व नॉन बोर्ड परीक्षा माध्यम में अपना चुनाव कर सकते थे। यही कारण है कि 70 फीसदी छात्र सीबीएसई दसवीं बोर्ड परीक्षा नहीं देते हैं।

शिक्षा विशेषज्ञ और अध्यापक वर्ग लगातार इस प्रणाली का विरोध करते नजर आते हैं क्योंकि उनका मानना है कि इस व्यवस्था से छात्रों का ही नुकसान हो रहा है, दसवीं बोर्ड परीक्षा छात्रों को 12 वीं बोर्ड परीक्षा के लिए तैयार कराती है।

सीबीएसई के अलावा किसी भी बोर्ड में दसवीं की परीक्षा वैकल्पिक नहीं है। वर्ष 2011 में यूपीए–2 की सरकार के कार्यकाल में इस नियम को लागू किया गया था। जिसमें दिल्ली के सभी स्कूलों में बोर्ड परीक्षा वैकल्पिक कर दी गई थी परंतु अब दोबारा दसवीं बोर्ड परीक्षा को अनिवार्य करने पर विचार किया गया है।

घाटी में जलते स्कूल, चौकीदार बने शिक्षक

हेमंत कुमार

नई दिल्ली। कश्मीर घाटी पिछले दिनों हिजबुल मुजाहिदीन कमांडर बुरहान वानी के मारे जाने से काफी तनाव में रही है। इस तनाव का अब तक कोई अंत नजर नहीं आ रहा है। दो महीने से अधिक समय तक लगे कर्फ्यू के बाद भी विद्रोह में कोई कमी नहीं आई है। बल्कि उसके बाद अब तक 29 स्कूलों में आगजनी के मामले सामने आए हैं।

इन मामलों में अभी तक कोई गिरफ्तारी नहीं हुई है। घटना के मद्देनजर एक वरिष्ठ शिक्षा अधिकारी की अध्यक्षता में एक जांच समिति का गठन किया गया है। इन स्कूलों में पढ़ने वाले हजारों विद्यार्थियों की शिक्षा अधर में लटकी हुई है। बारामुल्ला जिले के राफियाबाद स्थित स्कूल में प्रधानाचार्य के कमरे के बाहर टंगी तख्ती पर 'प्रधानाचार्य और चौकीदार' लिखा है।

घाटी में स्थित सभी स्कूलों के शिक्षकों को स्कूल की निगरानी करने के लिए कहा गया है। इतना ही नहीं उन्हें रात में भी स्कूल पर नजर रखने के आदेश दिए गए हैं ताकि दोबारा ऐसी घटना ना घटे। घाटी में चलते विद्रोह के बीच ये एक असाधारण घटना है, जिस पर जल्द ही सरकार के हस्तक्षेप की जरूरत है।

गतिविधियाँ

राजेंद्र उपाध्याय से रूबरू हुए पत्रकारिता के विद्यार्थी

नई दिल्ली। शनिवार दिनांक 24 सितंबर को दिल्ली विश्वविद्यालय के रामलाल आनंद महाविद्यालय में पत्रकारिता के विद्यार्थियों के लिए विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रुप में आकाशवाणी के प्रोड्यूसर, वक्ता एवं समाचार महानिदेशक श्री राजेंद्र उपाध्याय जी मौजूद रहे। उपाध्याय जी ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए आज के संदर्भ में समाचार वाचन की शैली में बदलाव व समाचार वाचन के लिए जिन महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना चाहिए जैसी बातों से छात्र–छात्राओं को अवगत कराया। उन्होंने रेडियो समाचार के लिए विषय के ज्ञान व अच्छे अनुवाद के महत्व पर प्रकाश डाला। साथ ही रवीश कुमार का उदहारण देते हुए अच्छे समाचार वाचक के गुणों को भी बतलाया। उन्होंनें बताया रेडियो एक श्रव्य माध्यम है, इसलिए शब्द ही संवेदनशीलता का आधार होते हैं। उन्होंनें विद्यार्थियों को सचेत करते हुए कहा कि संवाददाता द्वारा दी गई खबर पर आँख मूंदकर विश्वास कर लेना कई बार घातक साबित हो सकता है। विद्यार्थियों को वॉइस ओवर की जानकारी भी प्राप्त हुई। अन्त में जिज्ञासा से परिपूर्ण छात्रों के प्रश्नों का उत्तर देकर उनके संशयों को दूर करते हुए उन्होंनें सभी से विदा ली।

वैश्विक परिदृश्य और हिंदी पत्रकारिता विषय पर व्याख्यान

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के रामलाल आनंद महाविद्यालय में मंगलवार 4 अक्तूबर को हिंदी साहित्य परिषद् एवं हिंदी पत्रकारिता विभाग की ओर से "वैश्विक परिदृश्य और हिंदी पत्रकारिता" विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। इस व्याख्यान के मुख्य वक्ता विश्व हिंदी संस्थान,कनाडा के संस्थापक डॉ.**सरन घई** जी रहे। मुख्य अतिथि डॉ. सरन घई का स्वागत कॉलेज के प्राचार्य डॉ. विजय कुमार शर्मा जी ने किया। व्याख्यान के आरम्भ में मुख्य वक्ता का परिचय कार्यक्रम की संयोजिका डॉ. नीलम ऋषिकल्प जी ने किया। इस दौरान डॉ. घई जी ने सेमिनार कक्ष में उपस्थित छात्र– छात्राओं को वैश्विक पत्रकारिता के विषय में गूढ़ जानकरी प्रदान की। प्रोफेसर घई ने छात्रों को पत्रकारिता के आधार से लेकर देश –विदेश की वर्तमान पत्रकारिता के विभिन्न पहलुओं से रूबरू कराया। इस आयोजित सेमिनार में हिंदी एवं हिंदी पत्रकारिता विभाग की विभागाध्यक्षा एवं व्याख्यान की प्रभारी डॉ. श्रुति आनंद, कार्यक्रम की संयोजिका डॉ. नीलम ऋषिकल्प एवं विभाग के शिक्षकगण भी उपस्थित रहे।

प्रिंट माध्यम की वर्तमान चुनौतियों से अवगत हुए पत्रकारिता के छात्र

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के रामलाल आनंद महाविद्यालय में 7 अक्तूबर को एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में मुख्य अतिथि हिंदी समाचारपत्र अमर उजाला के एसोसिएट एडिटर **श्री योगेश जी** और दैनिक जागरण के वर्तमान आउटपुट हेड **श्री दिवाकर जी** रहे। दोनों ही अतिथियों ने पत्रकारिता के छात्रों के साथ अपने लंबे समय के अनुभवों को साझा किया। योगेश जी ने छात्रों को कॉर्पोरेट पत्रकारिता के बारे में बताया। साथ ही प्रिंट मीडिया के सदर्भ में विषय के लेखन और उसकी चुनौतियों से छात्रों को रूबरू कराया।

दिवाकर जी ने अपने 30 वर्ष के अनुभवों को भी साझा किया। उन्होंनें छात्रों द्वारा पूछे गए प्रश्नों पर भी बेहद सहजता के साथ उत्तर दिया।

विद्यार्थियों ने सीखी कैमरा एवं लाइटिंग की कला

नई दिल्ली। हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की ओर से सोमवार 3 अक्तूबर को **"कैमरा एवं लाइटिंग"** विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया।

इस व्याख्यान के मुख्य वक्ता बॉलीवुड के सिनेमेटोग्राफर एवं निर्देशक श्री **खालिद अब्बास** रहे। उन्होंने विद्यार्थियों को फिल्म एवं टेलीविजन के क्षेत्र में कैमरे के प्रयोग की बारीकियों से छात्रों को रूबरू कराया। इस अवसर पर पत्रकारिता विभागाध्यक्षा एवं शिक्षकगण भी उपस्थित रहे।

दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

नई दिल्ली। 30 सितम्बर को राम लाल आनंद महाविद्यालय द्वारा हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के विद्यार्थियों के लिए टेलीविजन तकनीक एवं प्रोडक्शन विषय पर आधारित दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। वक्ता के रूप में भारतीय जनसंचार संस्थान के तकनीकी विशेषज्ञ प्रो. रमेश चंद्र मौजूद रहे। कार्यशाला के पहले दिन प्रो. चंद्र का औपचारिक रूप से स्वागत किया गया। इसके उपरांत उन्होंने विद्यार्थियों के साथ सैद्धांतिक ज्ञान साझा किया। दूसरे दिन विद्यार्थियों को विषय के व्यवहारिक पहलू से अवगत कराया गया। बच्चों को कैमरे के सामने प्रस्तुतीकरण का भी अवसर प्राप्त हुआ।

फिल्म स्क्रीनिंग

राम लाल आनंद महाविद्यालय में बुधवार 26 अक्तूबर को फिल्म क्लब द्वारा केतन मेहता द्वारा निर्देशित फिल्म मिर्च मसाला(1986) की स्क्रीनिंग रखी गई और साथ ही वॉल ग्राफिटी प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। यह फिल्म गुजरात की महिलाओं की दशा का चित्रण करती है। फिल्म पूरी होने के बाद फिल्म मिर्च मसाला के विषय को लेकर चर्चा की गई। ग्राफिटी प्रतियोगिता के विजेता के रूप में नेहा, ऋषभ और मनीष को नगद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। (अमित)

टीवी में स्क्रिप्ट–संपादन एवं प्रोडक्शन एक ही सिक्के के दो पहलू: रमेश चंद्र

साक्षात्कार

टेलीविजन प्रोडक्शन एवं तकनीक हेड रमेश चंद्र से शिवानी और मुदित की खास बातचीत

• संचार क्रांति के इस युग में तकनीक और सॉफ्टवेयर आदि बहुत तेजी से बदल रहे हैं। ऐसे में प्रोडक्शन के क्षेत्र में काम करने वाले लोगों के सामने किस तरह की चुनौतियां हैं?

तकनीक ने ही प्रोडक्शन के क्षेत्र को मजबूत बनाया है। तकनीक के दम पर ही आज प्रोडक्शन के क्षेत्र में काम करने वाले लोगों का महत्व बढ़ गया है। मगर जिस तकनीक ने प्रोडक्शन के क्षेत्र में कार्यरत लोगों को मजबूत बनाया है, उसी तकनीक ने इस क्षेत्र से जुड़े लोगों के सामने चुनौतियां भी पेश की हैं। लगातार तकनीक बदलती रहती है, हर रोज नए प्रयोग, तकनीक और संचार के स्तर पर होते रहते हैं। ऐसे में सबसे बड़ी और महत्वपूर्ण चुनौती है, समय के साथ–साथ खुद को अपडेट रखना। दरअसल,प्रोडक्शन के क्षेत्र से जुड़े बहुतायत कर्मचारी किसी एक सॉफ्टवेयर, तकनीक आदि में निपुणता तो हासिल कर लेते हैं, मगर कुछ ही दिन में तकनीक में बदलाव होने पर वह फिर से एक फ्रेशर की भूमिका में आ जाते हैं। ऐसे में लगातार हो रहे प्रयोगों और बदलावों के प्रति प्रोडक्शन के लोगों को सजग रहना चाहिए और लगातार कुछ नया सीखते रहना चाहिए।

• टी.वी चैनलों में उपयोग होने वाली तकनीक काफी अत्याधुनिक होती है, जबकि पत्रकारिता की पढ़ाई करने वाले ज्यादातर छात्रों को संसाधनों के अभाव में ही अपनी पढ़ाई पूरी करनी पड़ती है। ऐसे में छात्र खुद को प्रोडक्शन की जरूरतों के हिसाब से कैसे तैयार करें?

यह हमारे देश की शिक्षा व्यवस्था की सच्चाई है कि मीडिया हाउसों में जिस तरह की अत्याधुनिक तकनीक का इस्तेमाल होता है, वैसी तकनीक छात्र जीवन में हमें बहुत कम सीखने को मिलती है। विश्वविद्यालय, कॉलेजों एवं विभिन्न संस्थानों में अक्सर ऐसे सॉफ्टवेयर एवं तकनीकों पर काम करना सिखाया जाता है, जो मीडिया हाउस की जरूरतों के हिसाब से पुराने हो चुके होते हैं। ऐसे में सबसे महत्वपूर्ण यह है कि यदि कोई विद्यार्थी प्रोडक्शन के क्षेत्र में रूचि रखता है तो वह छात्र जीवन में ही अपने अध्यापकों अथवा किसी भी जानकार व्यक्ति की मदद से किसी मीडिया हाउस अथवा प्रोडक्शन हाउस में इंटर्नशिप के मौके तलाश कर, इंडस्ट्री में प्रयोग हो रही लेटेस्ट प्रोडक्शन मशीनरी एवं तकनीक से रूबरू हो और उसे सीखने की कोशिश करें। इसके अलावा इंटरनेट आदि के साथ लगातार जुड़ाव बनाए रखने से प्रोडक्शन के क्षेत्र में होने वाले नए बदलाव एवं तकनीकों की सैद्धांतिक जानकारी तो मिलती ही रहेगी।

• क्या एक रिपोर्टर अथवा संपादक को प्रोडक्शन की जानकारी रखना भी आवश्यक है ? यदि हाँ तो क्यों?

एक रिपोर्टर अथवा संपादक को भी काफी हद तक प्रोडक्शन की जानकारी होनी चाहिए। यह जरूरी नहीं कि रिपोर्टर अथवा संपादक प्रोडक्शन के क्षेत्र में निपुणता हासिल करें, मगर कुछ हद तक जानकारी होना अनिवार्य है। क्योंकि टीवी में स्क्रिप्ट–संपादन एवं प्रोडक्शन एक ही सिक्के के दो पहलुओं की तरह हैं। दोनों एक–दूसरे के बिना अधूरे से हैं। ऐसे में किसी भी स्टोरी अथवा पैकेज को बेहतर एवं सृजनात्मक तरीके से तैयार करवाने और आकर्षक तरीके से दर्शकों तक पहुंचाने के लिए रिपोर्टर अथवा संपादक के मन में एक तय योजना होनी चाहिए, जिसके तहत जरूरत पड़ने पर वह प्रोडक्शन स्टाफ को सलाह मश्वरा भी दे सकता है।

• टेलीविजन प्रोडक्शन के क्षेत्र में रोजगार की कितनी संभावनाएं हैं?

टेलीविजन प्रोडक्शन के क्षेत्र में रोजगार की अपार संभावनाएं हैं। जिस गति से टेलीविजन का विकास हो रहा है और उसकी लोकप्रियता बढ़ रही है, उसी गति से टेलीविजन प्रोडक्शन के क्षेत्र में रोजगार की संभावनाएं भी बढ़ रही हैं। फिल्म से लेकर सीरियल, समाचार से लेकर टेलीविजन विज्ञापन आदि, टीवी पर प्रसारित होने वाली हर एक चीज के लिए प्रोडक्शन की आवश्यकता होती है। ऐसे में प्रोडक्शन के क्षेत्र में रोजगार के अवसर का अंदाजा हम खुद लगा सकते हैं। कई बड़े निर्देशक, निर्माताओं ने तो अपने खुद के बड़े–बड़े प्रोडक्शन हाउस संचालित किए हुए हैं, जिनमें सैकड़ों हजारों कर्मचारी कार्यरत हैं। इस क्षेत्र में रोजगार की संभावनाएं लगातार बढ़ रही हैं।

•कैमरा, लाइटिंग, शूटिंग की बारीकियों को जानने के लिए छात्रों को शूटिंग पर ले जाने की व्यवस्था पाठ्यक्रम में होनी चाहिए?

यदि कॉलेज अथवा संस्थान के पास पर्याप्त संसाधन, धन आदि की व्यवस्था है, तो निश्चित रूप से छात्रों को आउटडोर ब्रॉडकास्टिंग से लेकर इनडोर ब्रॉडकास्टिंग तक सभी चीजों का व्यावहारिक ज्ञान प्रोफेशनल तरीके से दिया जाना चाहिए।

पाकिस्तान को मिला नया तरफदार: रूस!

अंकित दूबे

नई दिल्ली। गोवा में हुए ब्रिक्स सम्मलेन के पहले ही यह बात समझ में आ चुकी थी कि सम्मलेन में जब पाकिस्तान के प्रायोजित आतंकवाद का मसला भारत उठाएगा, तो चीन उसका विरोध करेगा और ऐसे किसी भी प्रस्ताव को रोकने की कोशिश करेगा। चीन ऐसा पहले भी कर चुका है, चाहे वह संयुक्त राष्ट्र में उठा कुख्यात आतंकवादी अजहर मसूद का मसला हो या फिर जैश–ए–मुहम्मद जैसे आतंकी संगठन पर पाबंदी का मसला। इसीलिए ब्रिक्स सम्मलेन में जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पाकिस्तान को आतंकवाद का मुख्य नौकायन कह रहे थे, तो चीन के प्रवक्ता, आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में पाकिस्तान के योगदान को गिना रहे थे। यही कारण है कि पाकिस्तान चीन को

ब्रिक्स सम्मेलन 2016 के दौरान सभी देशों के प्रतिनिधिगण

अपना सदाबहार दोस्त कहता है। लेकिन हैरत की बात यह है कि इस मसले पर, रूस ने चुप्पी साधी थी। उम्मीद यह थी कि सम्मलेन की घोषणा में जब पाकिस्तान और खासकर जैश–ए–मुहम्मद व लश्कर–ए–तैयबा का नाम आएगा, तो रूस की पहल पर सीरिया के आतंकी संगठन अल–नुसरा का नाम भी इस घोषणा में शामिल कर लिया जाएगा। रूस ने ऐसा रवैया क्यों अपनाया, इसे लेकर यह अंदेशा लगाया जा रहा है कि या तो रूस को पाकिस्तान में रक्षा सामग्री का एक खरीदार दिखाई दे रहा है या फिर रूस को इस समय चीन की जरूरत है और इसीलिए अंतराष्ट्रीय मंच पर किसी भी तरह की खिलाफत नहीं होने देना चाहता। हालांकि पाकिस्तान के मुकाबले भारत रूसी रक्षा–सामग्री का ज्यादा बड़ा खरीददार है। चीन और रूस का यह रवैया निराश करने वाला तो है, लेकिन भारत को ज्यादा परेशान करने वाला नहीं है। कूटनीति के मोर्चे पर लड़ाईयां अक्सर जटिल होती हैं पर किसी नतीजे की तुरंत उम्मीद करना भी गलत है। इसके बावजूद तमाम अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत पकिस्तान को अलग–थलग करने में कामयाब रहा है। अमेरिका समेत पश्चिम के सभी देशों ने भी पाकिस्तान की कड़ी निंदा की है। यहाँ तक की संयुक्त महासभा में भी पाकिस्तान ने जिन मुद्दों को उठाया, उसका भी सभी जगह विरोध हुआ है। पाकिस्तान को अलग–थलग करने की कोशिशें अगर जारी रहीं, तो वे उसके साथ खड़े होने वाले देशों को भी देर सबेर सोचने पर मजबूर करेंगी।

BRICS 2016 India

विभागाध्यक्ष की कलम से

शिक्षा के बदलते परिदृश्य में बहुत कुछ बदल रहा है–ज्ञान का स्वरूप, उसकी दिशा, उसके उपकरण, माध्यम और उद्देश्य। अनुभव से कटा हुआ ज्ञान सूचना बन कर रह गया है। इस सूचना आश्रित शिक्षा व्यवस्था ने जिस शिक्षित नागरिकता का निर्माण किया है, वह अपेक्षित नहीं था। अपेक्षा तो यह थी कि कागज और स्याही के बीच से झाँकने वाला मानस मनुष्यता के मापदंड पर भी खरा उतरे, पर ऐसा हो ना सका। कलम पकड़ने वाले नैतिक हाथों ने कब ताकत के हथियार को अपना लिया, बदलती दुनिया के रणनीतिकारों को पता ही ना चल पाया और अब जब पता चला है तो बहुत देर हो चुकी है। इस बदलती दुनिया को फिर से नैतिकता की लीक पर ला खड़ा करना, वर्तमान की सबसे बड़ी चुनौती है। इतना तो तय है कि शिक्षक और छात्र इस चुनौती से भाग नहीं सकते। अतः आपके सामर्थ्य और समय की चुनौती के साथ आपके लिए ढ़ेर सारी शुभकामनाएं। उम्मीद है कि आपका यह प्रयास इसी दिशा में एक मजबूत कदम साबित होगा।

डॉ. श्रुति आनंद

समाज का दर्पण: फिल्म पिंक

अवधेश पैन्यूली

निर्देशक– अनिरुद्ध रॉय चौधरी
कलाकार– अमिताभ बच्चन, तापसी पन्नू, कीर्ती कुल्हारी, एंड्रिया

नई दिल्ली। अनिरुद्ध रॉय चौधरी के निर्देशन में बनी फिल्म पिंक एक कोर्ट आधारित ड्रामा है, जो समाज के असल जिंदगी के एक पहलू को दर्शाती है। सुभाष कपूर की फिल्म जॉली एलएलबी के बाद ये दूसरी फिल्म है, जिसमें कोर्ट रूम में होने वाले ड्रामों के दृश्यों को बखूबी पर्दे पर उतारा गया है।

फिल्म पिंक में असल जिंदगी के असल मुद्दों से जुड़े सवालों को उठाया गया है। पिंक उन सवालों को उठाती है जिनके आधार पर लड़कियों के चरित्र को आंका जाता है। ये कहानी है तीन ऐसी लड़कियों की, जो अपने–अपने घरों से दूर अपनी जिंदगी खुले विचारों के साथ आज़ाद जी रही हैं। फिर एक रात जब वे तीनों एक रॉक शो के लिए जाती हैं तो एक राजनेता का बेटा इनमें से एक लड़की मीनल के साथ छेड़छाड़ करने लगता है और मीनल उसके सर पर बोतल मार देती है। बदला लेने के लिए राजनेता का बेटा उल्टा मीनल पर ही उल्टे–सीधे आरोप मढ़ देता है और उन तीनों को परेशान करने लगता है। कोर्ट में उन तीनों लड़कियों का केस लड़ते हैं–दीपक सहगल(अमिताभ बच्चन)। रूढ़िवादी मानसिकता वाले वे लोग जो लड़कियों के जींस पहनने को गलत मानते हैं, उनको करारा जवाब फिल्म के जरिए बखूबी मिला होगा। फिल्म में दिल्ली, फ़रीदाबाद की गलियों के सीन को दर्शाया गया है। तीनों अभिनेत्रियों की एक्टिंग सराहनीय है। अमिताभ बच्चन दीपक सहगल के किरदार में भी खूब जमे।

व्यंग्य

"कल ही जियो लिया है–धड़धड़ाता फ्री वाला जियो। जिस पर सब कुछ फ्री है। भारत का विकास भी। जब यह किसी सुनामी की लहर के भाँति प्रधान सेवक के साथ दौड़ता हुआ आया, तो सोचा विकास को गति देने के लिए वे उसे अपने साथ खींच कर लाए हैं। फिर भी कुछ देर के लिए नीरा राडिया मन में कौंध गई, जिनके नाम से पूरे मीडिया जगत को एक नई कल्पना के साथ पेश किया गया था। खैर प्रधान सेवक जी भक्तों को प्रसाद बांटने के बाद चले तो गए थे, लेकिन तब तक वह पूरा काम कर चुके थे। जियो को जियो बना चुके थे।"

अवकेश

मुश्किल में हैं अन्नदाता

नई दिल्ली। इस देश में 1991 से जब से उदारीकरण का दौर शुरू हुआ है, तब से देश की तस्वीर बहुत बदल गई है। आज 26 साल बीत चुके हैं और हर 35 मिनट में एक किसान मर रहा है। गाँधी पीस फाउंडेशन के एक समारोह में एन.के. सिंह ने बताया कि–वर्तमान में किसान खेती छोड़ कर शहरों में 8–10 हजार की नौकरी कर रहे हैं क्योंकि वे जानते हैं कि 1 हेक्टेयर खेती करने के लिए कुल मिलाकर 38,000 रुपये की लागत है और उसकी **MSP (Minimum Support Price)** केवल 1,540 रुपये है। कुल आमदनी में से सूद और लागत के खर्च को हटाकर जो बचता है, उसमें घर का खर्च भी चलाना है और बच्चों को पढ़ाना भी है। तो अवसाद में आकर वह किसी पेड़ से लटककर अपनी जान दे देता है ,यही वजह है कि हर 35 मिनट में एक किसान मरता है।

गेहूँ का उत्पादन देश में 32 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इस देश में 62 लाख टन खाद्य अनाज सड़कों पर पड़ा है, जिसे या तो चूहे खा जाते हैं या गोदाम की कमी के कारण सड़ जाता है। उदारीकरण के बाद देश की पूँजी का वितरण इस प्रकार रहा –

जिस मुद्दे पर देश में क्रांति हो जानी चाहिए थी, वहाँ लोगों

वर्ष	पूँजी (प्रतिशत)	लोग (प्रतिशत)
2005	42	1
2010	48	1
2012	52	1
2016	70	1

के सिरों पर जूँ तक नहीं रेंग रही है। अगर ऐसा ही चलता रहा तो कल को हमारे पास कुछ न होगा और हमारे अधोवस्त्र भी कोई अम्बानी लेकर चला जाएगा।

श्रेया उत्तम.

सलाखों के पीछे की ज़िंदगी

दीपाली

नई दिल्ली। 2013 में आई राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो की एक रिपोर्ट के मुताबिक भारतीय जेलों में बंद कैदियों में 68 प्रतिशत ऐसे हैं जिन पर न्यायालय से कोई फैसला नहीं आया है। इन विचाराधीन कैदियों में भी 53 प्रतिशत ऐसे हैं जो अनुसूचित जाति, जनजाति या मुस्लिम समुदाय के होते हैं। अधिकतर विचाराधीन कैदी इतने समय से कैद हैं कि गुनाह साबित होने पर भी इतनी लंबी सजा नहीं दी जाती। आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण इनके पास बेल लेने तक के पैसे नहीं होते।

भारतीय जेलों में अतिप्रजन एक बड़ी समस्या है। एक कैदी की जगहपर 3 कैदियों को ठूंसा जाता है। उनके आहार व स्वास्थ्य पर भी ध्यान नहीं दिया जाता। अक्सर टीबी जैसे संक्रामक रोग से ग्रसित कैदियों को सामान्य कैदियों के साथ ही रखा जाता है। 2015 में राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग की रिपोर्ट में सामने आया कि कैदियों में आत्महत्या की औसत दर 16.9 प्रतिशत है, जो कि सामान्य नागरिकों की आत्महत्या दर से डेढ़ गुना ज़्यादा है। आत्महत्या के मुख्य कारण

के रूप में एक ही लिंग में बलात्कार होना सामने आया। जेलों में इस तरह के बलात्कार के कई मामले सामने आए हैं। महिला कैदियों की बात करें तो कुल 2 प्रतिशत जेल महिलाओं के लिए आरक्षित है, जिनमें 18 प्रतिशत महिला कैदियों को रखा गया है। जेल प्रशासन में महिला कर्मियों की कमी होने के कारण सुरक्षाकर्मियों द्वारा कैदियों के साथ हुए बलात्कार की घटनाएँ सामने आती रहती हैं। कई बार माँ के साथ बच्चों को भी जेल में रखना पड़ता है। महिला कैदियों और उनके बच्चों की सेहत का कोई खास ख्याल नहीं रखा जाता।

जेलों में इतना कुछ होने के बावजूद उनके सुधार के लिए ठोस कदम नहीं उठाए जाते। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो की 2016 में आई रिपार्ट के अनुसार पुनः अपराध करनेवालों की संख्या में तीव्र इजाफा हुआ है। तेरहवीं वित्त आयोग में विचाराधीन कैदियों के लिए निर्धारित की गई रकम कई राज्यों में या तो वैसी की वैसी पड़ी है या उसका कोई इस्तेमाल नहीं किया जा सका है।

आसमान में तैनात पैनी नजरें

शुभ्रा द्विवेदी

नई दिल्ली। कारगिल युद्ध के दौरान रही भारत की कमजोरी ही, सर्जिकल स्ट्राइक में अटूट शक्ति बनकर उभरी है। कमजोरी से बनी वो शक्ति है 'तकनीक'। इस सफल ऑपरेशन के श्रेय जितना पैराकमांडो को दिया जा रहा है उतना ही प्रशंसा का पात्र, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) भी है। इसकी 6 सैटेलाइट ने निरंतर दिन–रात सैनिकों को आतंकी ठिकानों से जुड़ी जमीनी जानकारी दी और सीमा की निगरानी भी की।

Cartosat 2 सैटेलाइट 90 मिनट में धरती का चक्कर लगाती है और 562 किमी. की दूरी से पार्किंग में खड़ी कारों की संख्या गिन सकती हैं। इसरो के 17,000 से भी अधिक लोग नई तकनीकों पर काम कर रहे हैं। इसी क्षेत्र में एक और उपलब्धि का नाम है– **GSAT6**। ये 2,000 किग्रा. की ऐसी सैटेलाइट है जो दोनों दिशाओं में दृश्यों का चित्रण कर सकती है। इसे पिछले वर्ष निगरानी, नेटवर्क केंद्रीय युद्ध और वायुयान संचालन के लिए विकसित किया गया था। युद्ध में लड़ाई के दौरान भी, सैटेलाइट को लाइव वीडियो भेजी जा सकती है।

'तकनीक'

रिपोर्ट्स के अनुसार, ऐसी तकनीक का प्रयोग अमरीका द्वारा 'जेरोनिमो' नामक ऑपरेशन में किया गया था।

आज भारत निर्मित धरती की कक्षा में 33 सैटेलाइट हैं, साथ ही एक मंगल गृह की कक्षा में स्थापित है। इनमें 12 संचार उपग्रह, धरती की निगरानी करते 10 उपग्रह और 4 मौसम नियंत्रण उपग्रह शामिल हैं। ये एशियाई प्रशांत क्षेत्र में अभी तक का सबसे बड़ा उपग्रहों का नक्षत्र है। निश्चित ही, विश्वभर में, भारत तकनीक के क्षेत्र में अपना लोहा मनवा रहा है।

भारत ने किया कीवियों का 3–0 से सफाया

अशियान अ खान

नई दिल्ली। लंबे भारतीय दौरे पर आई न्यूजीलैंड टीम के दौरे की शुरुआत अच्छी नहीं रही। तीनों टेस्ट में टीम को हार का सामना करना पड़ा। पहले टेस्ट में भारत ने न्यूजीलैंड को 197, दूसरे टेस्ट में 198 और अंतिम टेस्ट में 178 रनों से हराकर क्लीन स्वीप किया। दूसरा टेस्ट जीतकर भारतीय टीम ने आईसीसी टेस्ट रैंकिंग में शीर्ष पायदान हासिल किया।

यह चौथा मौका है जब भारत ने किसी टीम को सीरीज में एक भी मैच नहीं जीतने दिया हो। इससे पहले 1992–93 में मोहम्मद अजहरुद्दीन की कप्तानी में भारत ने इंग्लैण्ड को 3–0 से, 1993–94 में श्रीलंका को 3–0 से मात दी थी। इसके बाद महेंद्र सिंह धोनी की कप्तानी में 2012–13 में भारत ने ऑस्ट्रेलिया को 4–0 से मात दी थी। न्यूजीलैंड के खिलाफ इस क्लीन स्वीप के साथ कप्तान विराट कोहली भी ऐसा करने वाले तीसरे कप्तान बन गए हैं। इस पूरी टेस्ट सीरीज में कई पुराने रिकॉर्ड टूटे, तो कई नए रिकॉर्ड बनें, जिसमें अश्विन ने आईसीसी टेस्ट बॉलर की रैंकिंग में शीर्ष पायदान हासिल कर अहम भूमिका निभाई।

भारतीय गेंदबाजों का मैदान पर शानदार प्रदर्शन

- तीन टेस्ट की सीरीज में भारत ने न्यूजीलैंड को 3–0 से हराया।
- सीरीज का दूसरा टेस्ट जीतकर भारत ने टेस्ट रैंकिंग में पाया शीर्ष पायदान।
- पूरी सीरीज में भारतीय गेंदबाजी का बोलबाला रहा।

हरफनमौला "वीरू"

अक्षय

नई दिल्ली। वीरेंद्र सहवाग (वीरू) का जन्म 20 अक्टूबर 1978 को एक जाट परिवार में हुआ। हरियाणा के निवासी इनके पिता का नाम कृष्ण सहवाग एवं माता का नाम कृष्णा सहवाग है। भाई–बहनों के साथ इनका जीवन एक सामूहिक परिवार में बीता। वीरू ने अपने करियर की शुरुआत 1997–98 में दिल्ली क्रिकेट टीम से की। 1998 में इन्हें दिलीप ट्रॉफी के लिए नॉर्थ जोन क्रिकेट टीम में चयनित किया गया, जिसमें अच्छे प्रदर्शन के कारण सहवाग ने टॉप स्कोरर में अपना स्थान दर्ज किया।

रणजी ट्राफी में पंजाब के खिलाफ 175 गेंदों में 187 रन बनाए। इसके बाद अण्डर 19 की टीम में चयनित किए गए। अपना पहला विदेशी दौरा साउथ अफ्रीका से शुरू किया, जहाँ इन्होंने दो शतक बना कर अपना स्थान सातवें नंबर पर दर्ज किया। तेज रफ्तार से रन बनाने की कला के कारण इन्हें भारतीय क्रिकेट टीम का हिस्सा बनाया गया। 1999 में वन–डे क्रिकेट की शुरुआत पाकिस्तान के खिलाफ की, जिसमें वह महज 1 रन पर आउट हो गए, जिसके बाद 20 महीनों तक उन्हें कोई मौका नहीं मिला। 2001 में वापसी कर ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 54 गेंदों पर 58 रन बनाए और तीन विकेट भी लिए जिसके बाद मैन ऑफ द मैच का खिताब जीता। इसी साल साउथ अफ्रीका के खिलाफ अपने टेस्ट क्रिकेट करियर की शुरुआत की। सहवाग के नाम 278 गेंदों पर साउथ अफ्रीका के खिलाफ सबसे तेज तिहारा शतक लगाने का रिकॉर्ड भी है। अपने बहतरीन प्रदर्शन से कई रिकॉर्ड अपने नाम कर, क्रिकेट प्रेमियों का दिल जीता। भले ही इन्होंने 20 अक्तूबर 2015 को क्रिकेट से सन्यास ले लिया हो, लेकिन इनकी बल्लेबाजी के लोग आज भी दिवाने हैं।

शारापोवा पर डोपिंग का दोष, लगा प्रतिबंध

मयंक पाण्डे

विश्व की पूर्व शीर्ष रैंकिंग स्टार मारिया शारापोवा को महिला टेनिस संघ(डब्लूटीए) ने अपनी विश्व रैंकिंग से दरकिनार कर दिया है। शारापोवा पर डोपिंग में दोषी पाए जाने पर 15 महीनों का प्रतिबंध भी लगा है।

रियो ओलिंपिक में साक्षी मलिक ने रचा इतिहास

रियो ओलिंपिक में कांस्य पदक की बदौलत साक्षी मलिक ने नवीनतम यूडब्ल्यूडब्ल्यू (यूनाइटेड विश्व कुश्ती) रैंकिंग में शीर्ष पाँच में जगह बना ली है और अब महिला 58 किग्रा वर्ग में करियर के सर्वश्रेष्ठ चौथे स्थान पर हैं।

38–29 से दी मात

कबड्डी में ईरान के खिलाफ जीत दर्ज कर भारत बना विश्व चैम्पियन; फाइनल में भारत ने ईरान को हराया।

संरक्षकः
डॉ. राकेश कुमार गुप्ता
(प्राचार्य)

विभागाध्यक्षः डॉ. श्रुति आनंद
परामर्शदाताः डॉ. अटल तिवारी

सम्पादक मंडलः
मुदित भूटानी (सम्पादक)
शिवानी कोटनाला,शुभा द्विवेदी
(सह– सम्पादक)

सम्पादन सहयोगः
अंजनी, अंकित दूबे, अवधेश, शुभम, आयुषी, रवीना, अदिति, शिवानी, अंकित, अमित, मयंक, हेमंत, प्रदीप, अक्षय, राम, नीरज, रजत।

यह समाचारपत्र एक प्रशिक्षण कार्य के अंतर्गत तैयार किया गया है। प्रकाशित सामग्री से सम्पादक मंडल का सहमत होना अनिवार्य नही है।

हॉकी में पाकिस्तान को हरा, भारत बना एशिया का चैंपियन

अंजनी कुमार तिवारी

नई दिल्ली। भारतीय पुरुष सीनियर हॉकी टीम ने रविवार 30 अक्तूबर को मलेशिया की मेजबानी में हुई एशियन चैम्पियस ट्रॉफी के फाइनल मुकाबले में चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान को 3–2 से हराकर खिताब जीता।

भारत के लिए रुपिंदर पाल सिंह, अफ्फान यूसुफ और निकिन थिमैया ने गोल दागे, जबकि पाकिस्तान की ओर से मोहम्मद अलीम और अली शान ने गोल दागे। रुपिंदर ने मैच के 18वें मिनट में पेनाल्टी कॉर्नर पर गोल कर भारत को बढ़त दिलाई। दोनों तरफ से कई कोशिशें हुई, लेकिन सरदार सिंह की सूझबूझ के कारण सफलता भारत के खेमे में आई।

"नज़रिया"

हर तस्वीर में मुस्कुराता मैं, हर तस्वीर में प्रशंसनीय बनता मैं, हर तस्वीर में खुद को खोजता हुआ जीता मैं। मेरे कैमेरे से ही मेरी जिन्दगी। हिंदी पत्रकारिता विभाग के कुछ छात्रों ने इसी लगन के साथ कैद करीं कुछ मनमोहक तस्वीरें–

फोटोः सचिन कश्यप

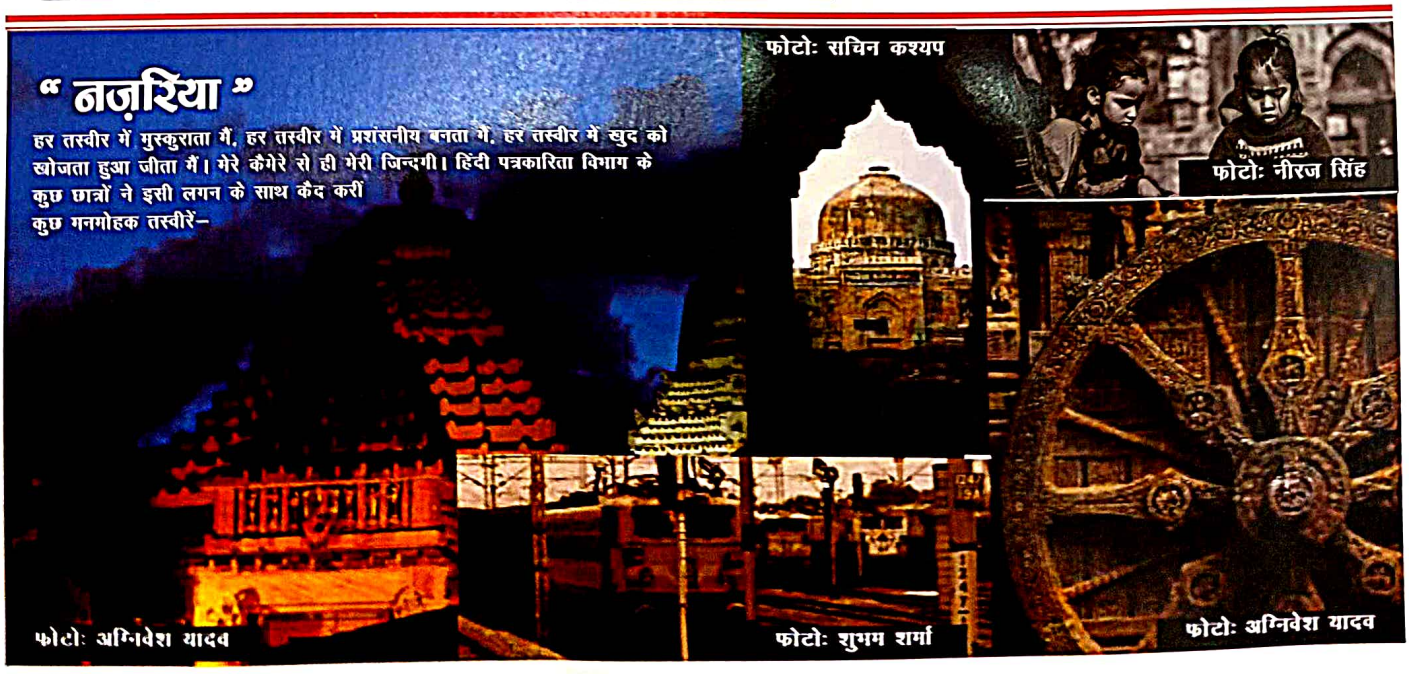

फोटोः नीरज सिंह

फोटोः अग्निवेश यादव

फोटोः शुभम शर्मा

फोटोः अग्निवेश यादव